UGC Approved, Journal No. 49321
Impact Factor : 2.591

ISSN : 0976-6650

शोध दृष्टि

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 8, No. 8

August, 2017

दूर होते जा रहे हैं। पाश्चात्य सभ्यता के अनुकरण से हमारे परिवारों की संरचना में, सोच में बदलाव आया है। हमारे परिवार छोटी–छोटी बातों में टूट रहे हैं।

परिवार व समाज अभिन्न है। परिवारों में परिवर्तन का समाज पर प्रभाव तो पड़ेगा ही। कुछ परिवर्तन सुखद है, तो कुछ दुखद। दुखद तथ्य यह है कि भौतिकतावाद के इस युग में हमने पैसे को सब–कुछ मान लिया है। पैसा कमाने के लिए आदमी यान्त्रिक जिन्दगी जी रहा है। इससे प्रेम, सौहार्द, सहयोग, संवेदनशीलता, त्याग, करूणा जैसे गुणों में कमी आई है। समाज में संवेदनहीनता बढ़ी है। अपराधों की संख्या बढ़ी है। महिला हिंसा, बलात्कार, दहेज हत्याओं की संख्या बढ़ी है। पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण ने भी हमारे सामने समस्याएं उत्पन्न की हैं। कन्या–भ्रूण हत्या जैसी समस्याएं भी हमारे समक्ष हैं। समाज में स्त्रियों का प्रतिशत तेजी से घटता जा रहा है, कारण है आधुनिक प्रौद्योगिकी। समाज में भ्रष्टाचार व गरीबी बढ़ी है। गरीबों व अमीरों के बीच की खाई अधिक चौड़ी होती जा रही है।

साथ ही कुछ सुखद तथ्य यह है कि आज माता–पिता अपने बच्चों की शिक्षा व कैरियर के प्रति जागरूक हैं। समाज में जाति–प्रथा, अस्पृश्यता के बन्धन ढीले हुए हैं। कुरीतियों, अन्धविश्वासों में कमी आई है। स्त्री साक्षरता का प्रतिशत बढ़ा है। विधवा विवाह को अब हेय दृष्टि से नहीं देखा जाता। लड़कियों के लिए समाज की सोच में परिवर्तन हुआ है। दुनिया ग्लोबल हो गई है। अब हम विश्व नागरिक बन गए हैं। हमारी दकियानूसी सोच में परिवर्तन हुआ है। पर्दा–प्रथा, छुआछूत जैसी समस्याओं में कमी आई है। सकारात्मक परिवर्तन तो हुए हैं पर फिर भी समस्याएं ज्यादा हैं और उनका हल भी हमें स्वयं ही खोजना पड़ेगा। हमारा अतीत अच्छा रहा है। संयुक्त परिवार के प्रेम, सहयोग, अपनेपन की आज हमें फिर जरूरत है। अकेलेपन, हताशा, डिप्रेशन, असुरक्षा से ग्रसित हमारी युवा पीढ़ी को फिर से प्रेम, सहयोग, सहकार व अपनेपन की जरूरत है। भौतिकवाद के साथ–साथ आध्यत्म को भी आपनाना होगा जो हमें वास्तविक शांति देगा। भारतीय संस्कार, भारतीय मूल्य ही हमें सही जीवन जीना सीखा सकते हैं। अतः हमें अपने परिवार में इन संस्कारों का फिर से रोपण करना पड़ेगा। ताकि हमारी नवयुवा पीढ़ी का सर्वांगीण विकास हो। परिवारों में आदर्शवादिता के संस्कार देने पड़ेंगे, ताकि परिवार एकजुट रहें। परिवारों को आदर्श बनाकर ही हम समाज को आदर्श बना सकते हैं।

सन्दर्भ :

1. तुलसी पटेल, भारत में परिवार–संरचना एवं व्यवहार, रावत, जयपुर (2011)
2. ऑगबर्न एण्ड निमकार्फ, ए हैण्डबुक ऑफ सोशियोलॉजी, यूरेशिया पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली (1972)
3. रामकृष्ण मुखर्जी, एवन्सपोली रेशेन्स इन द फैमिली एण्ड अदर एरोजन, चैकर एण्ड कम्पनी, बॉम्बे (1975)
4. शोभिता जैन, भारत में परिवार, विवाह और नातेदारी, रावत, जयपुर (1996)
5. डेविड जी. मैंडलबाम, सोसाइटी इन इण्डिया, यूनवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, बर्कले (1970)
6. Goode, Wiliam, J., "The Sociology of the family", in Robert Merton (Ed.), Sociology Today, Basic Books, New York, (1959)
7. Kapadia, K. M., Marriage and family in India, Oxford University Press, Bombay, (1966)
8. Leslie, Gerald R., The Family is Social Context, Oxford University Press, London, (1982)

∴

प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु पर्यावरण शिक्षा का स्वरूप निर्धारण

डॉ0 रत्नतुं मिश्रा*

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु पर्यावरण शिक्षा का स्वरूप निर्धारण करने से सम्बन्धित है। इसके अन्तर्गत प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु पर्यावरण शिक्षा–सम्बन्धी अभिमत मापनी का निर्माण करके निर्मित मापनी के प्रयोग द्वारा प्राथमिक शिक्षा तथा पर्यावरण से सम्बन्धित विशेषज्ञों और अध्यापकों का पर्यावरण शिक्षा के विषय में अभिमत ज्ञात किया गया तथा ज्ञात अभिमत के आधार पर पर्यावरण शिक्षा का स्वरूप निर्धारित किया गया। अध्ययन में विषय–विशेषज्ञों और अध्यापकों के अभिमत को जानने के लिये सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गयी। न्यादर्श चयन हेतु उद्देश्यीय न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया। अभिमत ज्ञात करने के लिये किये गये सर्वेक्षण हेतु 84 विशेषज्ञ तथा अध्यापक न्यादर्श के रूप में चयनित किये गये। सांख्यिकीय विश्लेषण के अन्तर्गत टी–परीक्षण, सहसम्बन्ध गुणांक, मध्यमान, मानक विचलन एवं प्रतिशत आदि की गणना की गयी। अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि विशेषज्ञों तथा अध्यापकों के अनुसार प्राथमिक स्तर पर दी जाने वाली पर्यावरण शिक्षा का स्वरूप विशिष्ट होना चाहिये। पर्यावरण शिक्षा स्थानीय सन्दर्भ में आस–पास के पर्यावरण की जानकारी पर केन्द्रित एवं वास्तविक जीवन तथा विद्यार्थियों के अनुभवों से सम्बद्ध होनी चाहिये। विद्यार्थियों को उनके गाँव की पर्यावरणीय समस्याओं के बारे में बताते हुये पर्यावरण संरक्षण में उनकी भूमिका से परिचित कराया जाना चाहिये। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि शिक्षण–अधिगम–सामग्री के रूप में मॉड्यूल्स का प्रयोग अधिक उपयोगी है।

वर्तमान युग विज्ञान का है। विज्ञान के अविष्कारों ने मनुष्य को सुविधापूर्ण जीवन व्यतीत करने में सहायता दी किन्तु इस सुविधा ने ही पर्यावरण से जुड़ी अनेकानेक समस्याओं को जन्म दिया। ओजोन पर्त का क्षरण, जीव–जातियों का विलुप्त होना, पर्यावरणीय प्रदूषण आदि ऐसी समस्यायें हैं जिन्होंने न केवल मानव जाति अपितु सम्पूर्ण सृष्टि के अस्तित्व के लिये ही संकट खड़ा कर दिया है। इन परिस्थितियों में आज यह आवश्यक हो गया है कि हर स्तर पर पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रयत्न किये जायें जिससे सभी मनुष्य ही नहीं वरन् समस्त प्राणी जगत अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुये अपना जीवन व्यतीत कर सकें। पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार अथवा संस्था का उत्तरदायित्व नहीं है अपितु यह कार्य तभी सम्भव है जब प्रत्येक व्यक्ति इस दिशा में अपना सर्वोत्तम योगदान दे। आज ऐसे नागरिकों की आवश्यकता है जो पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति सचेत हों और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक। अतः यह अपरिहार्य है कि पर्यावरण–संरक्षण सम्बन्धी आदतें बचपन से ही विकसित की जायें। किसी भी विषय के लिये सही समझ का विकास तभी हो सकता है जब विद्यार्थियों को उस विषय की जानकारी आरम्भ से ही दी जाये। पर्यावरण शिक्षा प्राथमिक स्तर से ही दी जानी चाहिये क्योंकि यह स्तर आदत–निर्माण हेतु सर्वाधिक उपयुक्त स्तर है। पर्यावरण शिक्षा की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिये कि विद्यार्थी सक्रिय अधिगमकर्ता बनकर पर्यावरण–सम्बन्धी ज्ञान, कौशल तथा सकारात्मक अभिवृत्तियों को आत्मसात कर सकें और अपने परिवेश को समझते हुये सीखे हुये ज्ञान का उपयोग विभिन्न परिस्थितियों में कर पायें। यहाँ यह उल्लिखित करना भी आवश्यक है कि अलग–अलग क्षेत्रों के विद्यार्थियों के अनुभव भी अलग–अलग होते हैं। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों के पर्यावरणीय अनुभवों में स्पष्ट भिन्नता होती है। इन क्षेत्रों की पर्यावरणीय समस्यायें और पर्यावरण संरक्षण के तरीके भी अलग–अलग होते हैं। प्रायः ग्रामीण जीवनशैली पर्यावरण के अधिक अनुकूल होती है और दैनिक जीवन के क्रियाकलाप भी इस प्रकार के होते हैं कि उनसे पर्यावरण संरक्षण में सहायता प्राप्त होती है। उक्त परिप्रेक्ष्य में स्थानीय अनुभवों से विषयवस्तु को जोड़ते हुये विद्यार्थियों को विस्तृत ज्ञान दिया जाना उपयुक्त सिद्ध हो सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों का पर्यावरण से गहरा जुड़ाव, उनके दैनिक जीवन के सामान्य कार्य और लोकजीवन की परम्पराओं का शिक्षा–प्रक्रिया में उपयोग पर्यावरणीय ज्ञान के निर्माण में विशिष्ट भूमिका निभा सकता है। स्थानीय सन्दर्भ में उपलब्ध उदाहरणों द्वारा स्पष्टीकरण तथा स्थानीय परिवेश में उपलब्ध संसाधनों एवं वस्तुओं का शिक्षण–प्रक्रिया में अधिकतम उपयोग निश्चित रूप से बच्चों में प्रकृति के प्रति मित्रवत् व्यवहार तथा पारिस्थितिकी के प्रति जागरूकता विकसित करेगा तथा उनमें सकारात्मक मनोवृत्ति भी विकसित हो सकेगी। साथ ही साथ बच्चों में आचरण–विचार की शुद्धता, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य–सम्बन्धी आदतों की नींव भी बाल्यकाल में ही पड़ सकेगी। जिस अनुपात में कक्षा–कक्ष की आन्तरिक शिक्षण–प्रक्रिया बाह्य जीवन से सम्बन्धित होगी उसी अनुपात में नीरस वातावरण की समाप्ति तथा रुचिपूर्ण शिक्षा–प्रणाली का विकास सम्भव होगा।

अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान समय में विद्यार्थियों को किसी न किसी रूप में पर्यावरण शिक्षा दी जा रही है किन्तु यह भी सत्य है कि जिन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये पर्यावरण शिक्षा की व्यवस्था की गयी है उनके अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो पा रहे हैं। वर्तमान समय में दी जा रही शिक्षा से विद्यार्थी न तो अपने पर्यावरण के प्रति संवेदनशील

*प्रवक्ता, बी0एड0 विभाग, डी0बी0एस0 महाविद्यालय, कानपुर